Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in; Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol.6, Issue-I, July 2020

भारत में कोरोना महामारी एवं पर्यावरणः एक दृष्टिकोण
(Corona Pandemic and Environment in India: A Perspective)

Dr. Arvind Kumar Verma
Assistant Professor (Sociology)
Ramabai Government Women Post Graduate College,
Dr. Ram Manohar Lohia Awadh University, Faizabad, U.P., (India)
Email: drarvindverma1974@gmail.com
Orcid: https://orcid.org/0000-0003-1067-0799

Dr. Rajesh Kumar Yadav
Assistant Professor (Economics)
Ramabai Government Women Post Graduate College,
Dr. Ram Manohar Lohia Awadh University, Faizabad, U.P., (India)
Email: rajeshyadav.gdc@gmail.com
Orcid: https://orcid.org/0000-0001-6909-0874
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v6n1.04

संक्षिप्त रूप

प्राकृतिक पर्यावरण को जहॉ तक देखा जाय तो यह हर प्रकार से जीवों के सकारात्मक जीवन का एक प्रमुख आधार है। इसी में जीवन का क्रमशः विकास होता रहता हैं। जीवों की हर छोटी–मोटी गतिविधियां इसी में पुष्पित–पल्लवित होती रहती हैं। पिछली शताब्दी में मानव की जनसंख्या में बेतहासा वृद्धि हुई। इस विशाल आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना पड़ा। परिणामस्वरूप पर्यावरण में प्रदूषणों का जन्म हुआ। प्राकृतिक संसाधनों में गिरावट दर्ज की गयी, जिससे अनेक स्थानों पर तरह–तरह के प्राकृतिक संकट उत्पन्न हो गये। हाल ही में कोरोना वायरस ने दस्तक दी, इस कारण भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में लॉकडाउन प्रक्रिया अपनाई गई, जिस कारण देखा जाय तो पर्यावरण प्रदूषण में बेहद कमी देखी गई। इस शोधपत्र में कोरोना वायरस महामारी के कारण पर्यावरण में हुए सकारात्मक परिवर्तन को रेखांकित किया गया है।

शब्दकुंजीः कोरोना महामारी, लॉकडाउन प्रक्रिया, पर्यावरण प्रदूषण, जलमण्डल, स्थलमण्डल तथा जीवमण्डल।

पृथ्वी पर पाये जाने वाले सभी पदार्थ अर्थात जीव से लेकर निर्जीव तक सभी पर्यावरण के ही अंग हैं। पर्यावरण के अन्तर्गत जलमण्डल, स्थलमण्डल तथा जीवमण्डल के सभी तत्वों को सम्मिलित किया गया है। दूसरे शब्दों में इसे हम दो घटकों जैविक व अजैविक में भी विभाजित कर सकते हैं। ये दोनों घटक जहॉ तक देखा जाय तो साथ–साथ क्रियाशील रहते हैं, जिससे जीवन का संचार होता है और जीव अपनी जीवनीय गतिविधियों को संचालित करते हुए वंशानुक्रम को आगे बढ़ाते रहते हैं। जीवों में यदि मनुष्यों की बात की जाए तो मनुष्य के पास विकसित सोच व समझ होने के कारण उसने प्रकृति में उपलब्ध संसाधनों का अधिकाधिक उपयोग करके अपने आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक समृद्धता को आगे बढ़ाया है। यही नहीं मनुष्यों ने बुद्धि एवं कौशल का उपयोग कर नवीन संसाधनों की भी खोज की है। कुछ हानिकारक तत्वों को भी बदलकर संसाधन बनाने और इन सभी को

अपने निवास, जीवन–यापन, वितरण व उपभोग के कार्यों में आवश्यकता से अधिक उपयोग किया है। वर्तमान समय में प्राकृतिक संसाधनों और प्रकृति के बहुमूल्य उपहारों का बड़े ही विवेकहीन तरीके से शोषण किया जा रहा है, और यह समझा जाने लगा है कि विकास के लिए आर्थिक विकास, आर्थिक विकास के लिए औद्योगिक विकास और औद्योगिक विकास के लिए संसाधनों का दोहन अत्यन्त आवश्यक है।[1]

बढ़ती जनसंख्या ने आवश्यकताओं और उपभोग को कई गुना बढ़ा दिया है। इस कारण उत्पन्न हुई बहुत सारी समस्याओं ने वैज्ञानिकों, समाज के बुद्धिजीवियों और साधारण जनमानस का ध्यान भी इस तरफ आकृष्ट किया है। ये सभी देर से ही सही अब सोचने को बाध्य हुए कि किस प्रकार प्रदूषित होती हवा, पानी, मिट्टी, जलवायु और समस्त पर्यावरण को कैसे बचाया जाय, जिससे भविष्य में पर्यावरण संतुलित रह सके। किन्तु इस दिशा में कोई खास प्रगति करता मानव समाज दिखाई नहीं दिया। संयोगवश इसी बीच कोरोना महामारी ने दस्तक दिया, पूरे विश्व में लगभग लॉकडाउन सा माहौल हो गया और देखते ही देखते पर्यावरण में अमूलचूल परिवर्तन दिखाई देने लगा, तो लगा, जो हम न कर सके उसे इस महामारी ने कर दिखाया।

पर्यावरण में असंतुलन पैदा होना ही पर्यावरण प्रदूषण को जन्म देता है। हमारी तेजी से दिनों–दिन बढ़ रही जनसंख्या, अनियोजित नगरीकरण, वनों का अंधाधुंध विनाश, अत्यधिक रासायनिक खादों एवं कीटनाशक रसायनों का प्रयोग तथा भौतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के परिणाम स्वरूप पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। पर्यावरणीय प्रदूषण मनुष्य सहित समस्त प्रकार की जैविक जातियों के जीवन को दुष्प्रभावित करता है तथा हमारी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को क्षति पहुँचाता है। प्रकृति में पाये जाने वाले वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, तापीय प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण आदि से हम सभी अक्सर रूबरू होते रहते हैं।[2]

वायु जो जीवन का महत्वपूर्ण आधार है के प्राकृतिक संगठन में किसी भी प्रकार का परिवर्तन वायु प्रदूषण कहलाता है। ये प्रदूषण प्रायः व्यक्तिगत, व्यावसायिक अथवा सामुदायिक स्तर पर हो सकते है। जंगलों की आग, दलदल से निकलने वाली मिथेन गैस, ज्वालामुखी की राख से उत्पन्न धूल व धुआ, वायु प्रदूषण के प्राकृतिक श्रोत होते है, जबकि मनुष्यजन्य वायु प्रदूषकों का वायुमण्डल से प्रवेश दो प्रकार के श्रोत स्थिर व गतिशील से होता है। वायु प्रदूषण के स्थिर श्रोतों में बड़े–बड़े कारखाने, विद्युत उत्पादन संयंत्र, पेट्रोलियम शोधन कारखाने और अनेक प्रकार के लघु उद्योग आते है। गतिशील श्रोतों में सड़क मार्ग, रेल मार्ग एवं वायु मार्ग से चलने वालें सभी प्रकार के वाहन आते है। वैज्ञानिकों के एक अनुमान के अनुसार किसी भी स्वचालित मशीन से एक गैलन पेट्रोल के दहन से 3 पौण्ड कार्बन मोनों ऑक्साइड तथा 14 पौण्ड नाइट्रोजन ऑक्साइड गैस निकलती है, जो 5 लाख से 20 लाख घन फीट हवा को प्रदूषित कर सकती है। इससे अनेक प्रकार के दुष्प्रभावों का जन्म होता है, जैसे–दम घुटना, सिर दर्द, खॉसी, निमोनिया, तपेदित, रक्त चाप, हृदय रोग तथा कैंसर आदि रोगों के अलावा ऑखो व श्वास नली में जलन पैदा होती है। अभी हाल ही में जर्मनी के एक जर्नल में प्रकाशित शोध पत्र में वायु प्रदूषण और कोविड–19 से हुई मौतो के रिश्तों को उजागर किया है। इस शोध पत्र में यह बताया गया है कि वायु प्रदूषण ग्रस्त इलाके में रहने

[1] इन्वायरमेंटल पॉल्यूशन एण्ड प्लांट रिस्पान्सेज, एस0बी0 अग्रवाल एण्ड एम0 अग्रवाल (1999)।
[2] बायोडाइवर्सिटी एण्ड इन्वायरमेंटल कन्जर्वेशन एम0 डेविस (2007)।

वालों के कोरोना की चपेट में आकर जान गवाने का खतरा सबसे जादा है। अगर कोरोना से मौत के ऑकड़ो को नियन्त्रित रखना है तो वायु मे पाये जाने वाली नाइट्रोजन डाइऑक्साइड के स्तर को हर हाल में मानक के अनुरूप ही रखना होगा, क्योकि नाइट्रोजन डाइऑक्साइड सीधे मनुष्य के श्वसन तन्त्र को नुकसान पहुँचाती है।[3]

यह प्रायः छोटे–बड़े वाहनों औद्योगिक कारखानों और बिजली संयंत्रो में ईधन के दहन से बड़े पैमाने पर उत्पन्न होती है। लॉकडाउन की वजह से दिल्ली एन0सी0आर0 में प्रदूषण का स्तर कॉफी कम हुआ है। कमोवेश यही हाल देश के हर बड़े शहरों में देखा गया है। बड़े अर्से के बाद आसमान नीला दिखा, प्राकृतिक सौदर्य के अद्भुत जीवंत नजारे देखने को मिले और तो और आप कल्पना नहीं करेगें आज हिमालय की ऊँची–ऊँची चोटियां जलंधर शहर से स्पष्ट देखी जा सकती है।

जीवन का जल से अनमोल सम्बन्ध रहा है। किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना आप बिना जल के नहीं कर सकते है। अगर हम जीवन के इतिहास पर नजर डाले तो यह बात सामने आती है कि जीवन की सर्वप्रथम उत्पत्ति जल से ही हुई है। जल ने जीवों के जीवन के क्रमशः विकास में एक जीवनोपयोगी वातावरण मुहैया कराया है। जल जीवन के लिए कितना उपयोगी है, इसे चन्द लाइनों में सिमटा नहीं जा सकता है। दिनो–दिन बढ़ती मानव की जनसंख्या व औद्योगिकरण ने जल में कार्बनिक, अकार्बनिक, रेडियोधर्मी तथा जैविक पदार्थो की मात्रा को मानक से बहुत अधिक बढ़ा दिया है, जिस कारण जल प्रदूषित हो गया है। प्रदूषण का ये सिलसिला सत्त बढ़ता ही गया और स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी कि जीवन के लिए उपयोगी पेयजल कहीं भी अब नजर नहीं आ रहा। पर क्या पता था की कोविड–19 महामारी के कारण लगाया गया लॉकडाउन इतना अमूलचुक परिवर्तन ला देगा। बड़े अर्से बाद मानव के अलावा जल से जुडे अन्य जीवों को काफी हद तक शुद्ध जल नसीब हुआ। जीवो ने इस खुशी का इजहार अपनी अठखेलियो से किया। पर्यावरणविदों के अनुसार जल में जीवन यापन करने वाले जीवों की संख्या में वृद्धि दर्ज हुई है। यह जलीय जीवों के लिए सकारात्मक परिणाम है। हालांकि नदियों के पानी की गुणवत्ता में सुधार के बारे में सरकार की तरफ से अभी तक कोई आधिकारिक रिपोर्ट जारी नहीं की गयी है।[4]

वातावरण में उत्पन्न होने वाली ऐसी तेज ध्वनी जो जीवों में बैचेनी उत्पन्न करे ध्वनी प्रदूषण कहलाती है। वर्तमान में यदि देखा जाय तो मानव व अन्य जीवों के स्वास्थ्य को ध्वनी प्रदूषण ने काफी हद तक प्रभावित किया है। विगत कुछ वर्षो में यातायात के संसाधनों व औद्योगिकीकरण के कारण ध्वनी के स्तर में काफी हद तक वृद्धि हुई है। लगातार ध्वनी युक्त पर्यावरण में बने रहने के कारण बेचैनी, झुझलाहट, सिरदर्द एवं अनिद्रा जैसे रोगों से मानव को दो–चार होना पड़ता है। उच्च ध्वनी शरीर की आन्तरिक गतिविधियों को भी प्रभावित करती है, जिससे मानव अपने आप को हमेशा असहज सा महसूस करता है। शोर का स्तर जादा होने से परिंदो के अलावा अन्य जीव–जन्तु की दिनचर्या भी अव्यवस्थित हो जाती है। शोधकर्ताओं की माने तो परिंदो की अलग–अलग प्रजातियों में शोर के प्रभाव की वजह से उनकी उम्र कम हो रही है। इनके पैदा होने वाले बच्चे शुरू से ही तनाव ग्रस्त होने लगते है तथा

[3] ए0एस0यू0 रिसर्च मैग्नीज एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी, एडीटर–कॉनरेड जे0 स्टोरेड (2004)।
[4] नया ज्ञानोदय (विशेषांक) बिन पानी सब सून, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, (2004)।

इनकी समय से पहले ही मृत्यु हो जाती है। कोविड–19 के कारण लगाये गये लॉकडाउन ने हर जीव–जन्तु के स्वीकार योग्य ध्वनी का माहौल पैदा कर दिया है जिससे इनका जीवन पहले की अपेक्षा बेहतर हुआ है।

जल के सामान्य ताप में अनावश्यक वृद्धि तापीय प्रदूषण पैदा करता है। जल के तापमान में हुई यह वृद्धि जल से सरोकार रखने वाले सभी जीवों के लिए हानिकारक होता है। नाभिकीय ऊर्जा के संयंत्र, जल विद्युत ऊर्जा संयंत्र, कोयला चालित ऊर्जा संयंत्र, औद्योगिक संयंत्र व घरेलू मल–मूत्र जल तापीय प्रदूषण के प्रमुख श्रोत है। शोध से यह बात स्पष्ट है कि ठंडे जल की अपेक्षा गर्म जल में कम आक्सीजन घुलती है। जल में आक्सीजन की कम मात्रा पाये जाने के कारण जलीय जीवों की श्वसन दर, भोजन ग्रहण एवं तैरने की गति में अस्वभाविक वृद्धि होती है। जिस कारण जलीय जीव अपना सामान्य जीवन सही ढंग से जी नहीं पाते तथा जीवों की असमय मृत्यु हो जाती है। कोविड–19 के कारण अपनाये गये लॉकडाउन प्रक्रिया से तापीय प्रदूषण में कमी देखी गयी है, यह जलीय जीवों के लिए कुछ हद तक शुभ संकेत है।

समुद्री जल में दिनो–दिन विसर्जित हो रहे अपशिष्ट पदार्थो के कारण जैविक संपदाओ को क्षति पहुँच रही है। इससे समुद्री जीवो के साथ–साथ मानव का भी स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। उनकी दैनिक क्रियाओ में बाधा उत्पन्न हो रही है। समुद्री जल का प्रदूषण मुखतः पेट्रोलियम पदार्थो एवं उसके विभिन्न उत्पादो का सागर तलो पर फैलने के कारण होता है। कृतिम डिटरजेंटों में प्रयुक्त झागकारी रसायन, कार्बनिक एवं अकार्बनिक यौगिक व प्लास्टिक पदार्थो के कारण समुद्री प्रदूषण बढ़ा है।[5] कोविड–19 के कारण पेट्रोलियम पदार्थो के उपयोग में बेहद कमी के कारण समुद्रीय प्रदूषण में कमी देखी जा सकती है।

कोविड–19 महामारी अभी कुछ दिनों की ही बात है, परन्तु इन कुछ दिनो में ही इससे जीस प्रकार से पुरे विश्व के मानव समाज को जुझते हुए देखा गया, डरे हुए देखा गया, आप सोच भी नहीं सकते कि अदृश्य सा यह वायरस इतना प्रभावशाली व ताकतवर बनकर सामने आयेगा की दुनिया तबाह होती दिखने लगेगी। विकासित देशो की स्थिति दयनीय सी हो चुकी है। ये देश अपने नागरिको को सुरक्षा नहीं दे पा रहें है। जबकि ये साधन सम्पन्न है। ऐसी स्थिति में आप कल्पना कर सकते है कि विश्व के अन्य छोटे–मोटे विकासशील देशों की स्थिति क्या होगी, जो कही से भी इसके आसपास नहीं ठहरते। सभी देशों की अर्थव्यवस्था चौपट होती जा रही है। लोग बेरोजगार होते जा रहें है। मध्यम वर्ग काफी कस्मकस में पड़ा है, तो वही मजदूर वर्ग रोड़ो पर भूख से बेहाल होकर कई किलोमीटर पैदल ही अपने गांव की तरफ पलायित कर रहा है। उसके पास न तो पीने का पानी है, और न ही पेट भरने के लिए भोजन। दूध पीते छोटे–छोटे बच्चें, भूख से बेहाल, इस प्रचंड गर्मी मे जीवन व मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहें हैं। महामारी के कारण हर तरफ लॉकडाउन है, जिससे छोटे–बड़े कल–कारखाने बन्द पड़े है। इन उद्योगों से किसी भी प्रकार का अपशिष्ट नदियों में प्रवाहित नहीं हो रहा है। जल प्रदूषण में कमी देखी जा सकती है। इस कारण नदियों का जल काफी निर्मल हो चला है। यातायात के सभी साधन कही से भी नजर नहीं आ रहें सब के सब खड़े है जिस कारण वायु प्रदूषण में कमी देखी जा सकती है। इसी प्रकार अन्य सभी प्रकार के प्रदूषणों में भी सुधार देखा गया है।

[5] पर्यावरण विज्ञान के विविध आयाम, डा0 दया शंकर त्रिपाठी (2013)।

एक तरह से कहा जा सकता है कि कोविड–19 महामारी के कारण प्राकृतिक वातावरण में हर स्तर पर सकारात्मक सुधार हुआ है। लॉकडाउन उस प्रक्रिया के रूप में हमारे बीच उभर कर आया है जिसे सरकारें चाहे तो समय–समय पर अमल में लाकर पर्यावरण में बढ़े हुए प्रदूषण को कम कर सकती है। अब देखना है कि विश्व के सभी देश इससे कुछ सीख लेकर पर्यावरण में यथोचित सुधार को बनाये रख पायेगें। ये तो आने वाला समय ही बतायेगा की हम प्रकृति से कितना तालमेल बिठा पाते है कि नही।

****